## पाठ - 9

## भारत का भौतिक भूगोल

भारत की भौगोलिक स्थिति : विश्व के मानचित्र में भारत पूरी तरह से उत्तरी गोलार्द्ध और पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है । भारतीय मुख्य भूमि 8°4' उत्तर और 37°6' उत्तरी अक्षाश और 68°7' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है । इस प्रकार भारत की उत्तर दक्षिण विस्तार 3214 KM व पूर्व पश्चिम विस्तार 2933 KM हैं । भारत संसार की कुल भूमि क्षेत्र के 2.42 प्रतिशत है । कर्क रेखा भारत के (23 0 30' उत्तरी) देश के मध्य भाग से गुजरती हैं। यह देश को दो बराबर भागो में विभाजित करती है । यह 820 30' पूर्वी देशांतर देश के लगभग मध्य से गुजरती हैं । यह भारत के मानक मध्याह्न के रूप में माना जाता हैं । भारत एशिया महादीप का हिस्सा हैं । भारत तीन तरफ से पानी से घिरा हुआ है । इसके उत्तर पश्चिम की ओर पाकिस्तान और अफगानिस्तान हैं । चीन ,भूटान ,तिब्बत ,नेपाल इसके उत्तर में स्थित हैं । बांग्लादेश और म्यांमार इसके पूर्व में है । श्रीलंका ,और मालदीप हिन्द महासागर इसके दक्षिण की ओर स्थित हैं । देश का सबसे दक्षिणतम बिंदु इंद्रा प्वाईट (निकोबार दीप समूह) जो 6°4' दक्षिणी अक्षाश पर स्थित है, जबकि भारत का दक्षिणतम बिन्दु कन्याकुमारी 8°4' उत्तरी अक्षाश पर स्थित हैं ।

**स्थानीय महत्व** :- भारत का दक्षिण भाग समुन्द्र से घिरा हैं । भारत की हिन्द महासागर में सामरिक स्थिति हैं | भारत दक्षिण एशिया में जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि में सबसे बड़ा देश हैं । यह यूरोप और अफ्रीका ,दक्षिण पूर्व एशिया ,पूर्वी एशिया के दूरस्थ क्षेत्रों और ओशीनिया के बीच समुंद्री मार्गो पर नियंत्रण करता हैं । यही कारण है कि भारत के व्यापारिक सबंध प्राचीन काल से अनेक देशों के साथ अच्छे रहें हैं | भारत समुद्र और भूमि से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ हैं । मुख्य व्यापार भारत -तिब्बत के बीच हैं । दाज़िलिंग के निकट कलिम्पोग जालपा - लादरे के माध्यम से ल्हासा (तिब्बत) से जुड़ा हुआ हैं ।

**भारत के राज्य और संघीय राज्य** :- क्षेत्रफल के अनुसार भारत संसार का सातवा बड़ा देश हैं । इसकी स्थल सीमा की लम्बाई 15200 KM और 6100 KM लंबी तट रेखा हैं । भारत का कुल क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी. हैं । अच्छे शासन के लिए भारत को 29 राज्यों और 7 संघ राज्यों में विभाजित किया गया हैं ।

**भारत के भौतिक विभाग** :- भारत भौगोलिक विविधता का देश हैं । यहाँ कुछ क्षेत्रों में उच्च पर्वत चोटियाँ हैं । दूसरी ओर नदियों द्वारा निर्मित समतल मैदान भी हैं । भौतिक विशेषताओं के आधार पर भारत को छ: भागों में विभाजित किया गया हैं ।

**1.उत्तरी पर्वत** :- इसको तीन समूहों में विभाजित किया गया हैं ।

**(क) हिमालय** :- हिमालय एक नवीन वलित पर्वत हैं । संसार की सर्वोच्च पर्वत श्रृखला हैं । यह पश्चिम-पूर्व दिशा से भारत की उत्तरी सीमा के साथ 2500 किमी. दूरी में सिन्धु नदी से ब्रहमपुत्र नदी तक फैला हैं । हिमालय को तीन समानान्तर श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं ।

**महान हिमालय या हिमाद्री** :- महान हिमालय में उत्तरी पर्वत माला और चोटियां शामिल हैं । इसकी औसतन ऊचाई 6000 मीटर और चौडाई 120 किलोमीटर से 190 के बीच हैं । यह बर्फाछादित है और इसके नीचें कई ग्लेशियर हैं । यहाँ ऊची चोटियाँ हैं । जैसे -माउट एवरेस्ट कजंनजंगा, मकालू ,धोलागिरी आदि हैं ।

**मध्य हिमालय या हिमाचल** :- इस चोटी की ऊचाई 1000 और 4500 मीटर के बीच है और चौडाई 50 किलोमीटर है | इसमें प्रमुख श्रेणियाँ पीर पंजाल, धोलाधार और महाभारत हैं । यहाँ कई हिल स्टेशन हैं । जैसे - शिमला, डलहोजी, चकराता, मसूरी और नैनीताल हैं ।

**वाह्यं हिमालय या शिवालिग** :- यह हिमालय की सबसे बाह्य पर्वत श्रेणी हैं । इसकी उचाई 900 - 1100 मीटर और चौड़ाई 10-50 किलोमीटर के बीच है । ये कम ऊचाई की पहाड़ियाँ हैं | जैसे - जम्मु हिल्स, मिशिमी हिल्स आदि ।

**(ख) ट्रांस हिमालय (हिमालय के उस पार )** :- यह महान हिमालय के उत्तर में समानान्तर फैला हुआ हैं | जिसे जस्कर पर्वत कहते हैं | जस्कर पर्वत के उत्तर में लद्दाख श्रेणी स्थित है | जस्कर व् लद्दाख श्रेणी के बीच होकर सिन्धु नदी बहती है । के -2 संसार की दूसरी सबसे उची चोटी हैं ।

(ग) पूर्वांचल पहाड़ियाँ :- इसमें मिशामी, नागा, मिज़ो पहाड़ियाँ हैं जो कि पूर्व की ओर स्थित है । मेघालय पठार के गारो, ख़ासी और जयतिया पहाड़ियां भी इसमें शामिल हैं ।

2. उत्तरी मैदान :- उत्तरी मैदान हिमालय के दक्षिण और प्रायदीप पठार के उत्तर में स्थित है । उत्तरी मैदान मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित हैं ।

1. पश्चिमी मैदान :- यह मैदान सिन्धु नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई अवसादों के जमा होने से बना हैं । यह अरावली के पश्चिम में स्थित हैं | यह मैदान सतलज, व्यास और रावी नदियों द्वारा लाए अवसादों के जमा होने से बना हैं । मैदान का यह भाग दोआब से बना हैं ।

2. गंगा - ब्रहम्पुत्र का मैदान :- यह दो मुख्य नदी गंगा और ब्रहम्पुत्र नदियों द्वारा लाए अवसादों के जमा होने से बना हैं । यहाँ सभी प्राचीन सभ्यताएं जैसे हड़प्पा और मोहन जोदड़ो भी स्थित हैं | जिसे नदी घाटी सभ्यता भी कहते हैं | यह भूमि नदियों के जल की उपलब्धता के कारण उपजाऊ हैं ।

**दोआब** :- दो नदियों के बीच की जलोद भूमि को कहते हैं ।

**खादर** :- लगभग प्रत्येक वर्ष नदियों के बाढ प्रभावित क्षेत्र को कहते हैं ।

**बांगर** :- नदियों के बाढ क्षेत्र में स्थित उच्च भूमि को कहते हैं ।

**प्रायद्वीप पठार** :- इस प्राचीन भू -भाग को गोंडवाना लैंड भी कहा जाता हैं । यह लगभग 5 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ हैं । यह गुजरात , महाराष्ट्र ,बिहार ,कर्नाटक और आंध्रप्रदेश राज्यों में फैला हैं । नर्मदा नदी प्रायद्वीप पठार को दो भागों में बाँटती हैं - मध्य उच्च भूमि और दक्कन पठार ।

**1. मध्य उच्च भूमि** :- इसका विस्तार नर्मदा नदी से उत्तरी मैदानों के मध्य हैं । अरावली एक महत्वपूर्ण पर्वत है जो गुजरात से राजस्थान होते हुए दिल्ली तक फैला हुई है । अरावली पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी माउन्ट आबू के पास गुरुशिखर 1727 मी. हैं । मालवा का पठार व छोटा नागपुर का पठार मध्य उच्च भूमि के हिस्से हैं ।

**2. दक्कन पठार**:- दक्कन पठार में काली मिट्टी क्षेत्र को दक्कन ट्रैप के रूप में जाना जाता है । यह ज्वालामुखी विस्फोट के कारण बना हैं । यह मिट्टी कपास और गन्ने की खेती के लिए अच्छी मानी जाती हैं । मोटे तौर पर दक्कन पठार दो भागों में विभाजित हैं ।

**(क) पश्चिमी घाट** :- पश्चिमी घाट या समुद्र के पश्चिमी किनारें पर स्थित हैं । यह पश्चिमी तट के समानान्तर लगभग 1600 किलोमीटर लम्बा हैं । पश्चिमी घाट की औसतन ऊंचाई 1000 मीटर है । गोदावरी, भीमा और कृष्णा नदियों का प्रवाह पूर्व की और हैं जबकि ताप्ति नदी पश्चिम की ओर बहती हैं । प्रसिद्ध जल प्रपात शरावती नदी पर जोग प्रपात और कावेरी नदी पर शिव समुन्द्रम हैं ।

**(ख) पूर्वी घाट** :- पूर्वी घाट का विस्तार लगातार नहीं हैं । इनकी औसत ऊचाई 600 मीटर हैं । यह महानदी घाटी के दक्षिण से पूर्व तट के साथ नीलगिरी पहाड़ियों तक हैं । इस क्षेत्र में सबसे ऊँची चोटी महेंद्र गिरी हैं । यह महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदी यंत्रो द्वारा अप्रवाहित हैं ।

**भारतीय रेगिस्तान** :- भारतीय रेगिस्तान अरावली की पहाड़ियों के पश्चिमी किनारे की ओर स्थित हैं । इसे मरुस्थल भी कहा जाता है । यह संसार में नौवा सबसे बड़ा रेगिस्तान है । यहाँ अर्द्ध शुष्क मौसम रहता हैं । यहाँ प्रति वर्ष 150 मिमी से कम वर्षा होती है । यहीं पर काटेदार झाड़ियां वनस्पति के रूप में पाई जाती हैं । लूनी नदी इस क्षेत्र में मुख्य नदी हैं । इसकी सभी धारायें वर्षा के समय में ही दिखाई देती है, अन्यथा वे रेत में गायब हो जाती हैं ।

**तटीय मैदान** :- भारत में तटीय मैदान अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के समानान्तर प्रायदीपीय पठार के साथ है । पश्चिमी तटीय मैदान अरब सागर के साथ एक संकीर्ण पट्टी 10-20 किलोमीटर चौड़ा हैं । यह कच्छ के रण से कन्या कुमारी तक फैला हुआ हैं । पश्चिमी तटीय मैदान को तीन भागों में बाटा गया है । (1) कोकण तट मुंबई से गोवा (2)कर्नाटक तट गोवा से मंगलोर तक (3) मालाबार तट मंगलोर से कन्याकुमारी तक शामिल है । पूर्वी तट बंगाल की खाड़ी के साथ हैं ।यह पश्चिमी तटीय मैदान से अधिक व्यापक हैं | इसकी औसत चौडाई 120 किमी. हैं । इस तट के उत्तरी भाग को उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिणी भाग कोरोमंडल कहा जाता है । पूर्वी तटीय मैदान महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के द्वारा बनाई गई डेल्टा है । चिल्का भारत में सबसे बड़ी खारे पानी की झील है । जो महानदी डेल्टा के दक्षिण में स्थित है । तटीय मैदानों में मसाले, चावल, नारियल, काली मिर्च आदि उगाये जाते हैं । वे व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहे हैं। विम्बनाद प्रसिद्ध लैगून हैं, जो मालाबार तट पर स्थित हैं ।

**द्वीप समूह** :- भारत में द्वीप के दो मुख्य समूह हैं । बंगाल की खाड़ी में 204 द्वीपों का व अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर में 43 द्वीपों का लक्ष्यद्वीप समूह हैं । लक्ष्यद्वीप केरल के मालाबार तट के निकट अरब सागर में स्थित है । कवरती लक्ष्यद्वीप की राजधानी है | यह कोरल द्वारा बना है और विभिन प्रकार के पौधो और जानवरों से सम्पन्न है|

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह उत्तर से दक्षिण में बंगाल की खाड़ी में विस्तृत है | अंडमान और निकोबार द्वीप पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है | इन द्वीपों पर विभिन्न आकर्षक पर्यटन गतिविधियों को विकसित किया गया है |

**भारत में जल प्रवाह प्रणाली** : सतह से पानी मुख्य रूप से नदियों के माध्यम प्रवाह होता है | नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अप्रवाहित क्षेत्र बेसिन कहा जाता है |

**सहायक नदी** : एक धारा या नदी जो एक बड़ी नदी में बहते हुए जा मिलती है | जैसे यमुना गंगा में मिलती है |

डेल्टा : नदी के निचले हिस्से में मुहाने पर छोटे रेत, जमा होने से एक त्रिकोनिय आकर की भूमि विकसित होती है उसे डेल्टा कहते हैं | जैसे गंगा डेल्टा |

उत्पत्ति के आधार पर जल प्रवाह के दो भागों में विभाजित किया जा सकता है |

**हिमालय जल प्रवाह प्रणाली** : हिमालयी नदियाँ अधिकांश बारहमासी हैं | इसका तात्पर्य है कि इनमें वर्ष भर पानी होता है | क्योंकि ये नदियाँ अधिकांशत: हिमनद और बर्फ चोटियों से उत्पन्न होती है | इस श्रेणी में मुख्य नदियाँ निम्नांकित है :-

सिन्धु नदी प्रणाली :- जेलम, रवि, व्यास, सतलज

गंगा नदी प्रणाली :- यमुना, रामगंगा, गागर, गोमती, गंडक, कोसी

ब्रहमपुत्र नदी प्रणाली :- दिबांग, लोहित, तिस्ता, मेग्ना आदि

**प्रायद्वीप जल प्रवाह प्रणाली** : अधिकतर प्रायद्वीपीय नदिया पूर्व की ओर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में प्रवेश करती है | केवल नर्बदा नदी और तापी नदिया पश्चिम की ओर प्रवाह करती हैं | यह पन बिजली पैदा करने के लिय उपयुक्त है क्योंकि ये नदियां जल प्रपात एव क्षिप्रिका बनाती है | महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी मुख्य प्रायद्वीपीय नदियां है |

पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का 97 प्रतिशत से अधिक खारा जल है, और शेष 3 प्रतिशत का अधिकांश भाग ध्रुवीय प्रदेश में बर्फ के रूप में जमे हुए है । जल का एक प्रतिशत से भी कम बारिश, नदियों झीलों और भूमिगत पानी के रूप में प्राप्त हैं । मीठे ताज़ा पानी का यह छोटा भाग विश्व की पूरी आबादी की जरुरतों को पूरा करने के लिए है । अत: ताज़ा पानी एक बहुमूल्य संसाधन हैं । और नदीयों और झीलों को बढ़ते प्रदूषण के कारण एक चेतावनी हमारे समक्ष हैं ।

**नदियों को हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है** :- कई शहर पवित्र नदियों के किनारें हैं । इसके बावजूद यहाँ पयावरण को गैर जिम्मेदार और पर्यावरण विनाशक गतिविधियों के साथ प्रदूषित किया जा रहा हैं । भारतीय नदियों में लगभग 70 प्रतिशत मल निकास से प्रदूषित होता हैं । यद्दपि पानी के मुद्दों को भारत में प्रांतीय सरकारों द्वारा आवंटित किया जाता हैं | परिस्थितिकी विज्ञान शास्त्री और संरक्षण वादियों ने लबें समय से मांग की है कि नदियों को एक इकाई और गंभीर प्रयास के एक निर्धारित समय के विशिष्ट संयोजन पर काम के रूप में लाने के लिए व्यवस्था किया जाना चाहिए । यदि नदियों के पानी की गुणवत्ता के सुधार के लिए आवश्यक हैं । राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (एन. आर .सी. पी ) पानी के गुणवत्ता में उम्मीद की हैं । जल संचयन देश भर में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा हैं । कई नागरिक संगठनों और लोगों के आन्दोलनों ने नदियों की गंम्भीर हालत के लिए जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने में योगदान दे रहें हैं ।